THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–2, Issues– 2 April-June: 2025

प्राचीन भारत में शिक्षा प्रणाली : एक अध्ययन

1. संध्या रानी, शोधार्थी, शिक्षा विभाग, सिंघानिया विश्वविद्यालय, झुंझुनू, राजस्थान
2. डा. राजपाल सिंह यादव, अस्सिटैंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग सिंघानिया विश्वविद्यालय, झुंझुनू, राजस्थान।

सारांश :-

प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली न केवल एक शैक्षिक व्यवस्था थी, बल्कि यह भारतीय सभ्यता और संस्कृति की आत्मा थी। यह प्रणाली एक ऐसी जीवनशैली थी, जो मनुष्य को न केवल ज्ञान प्राप्ति हेतु, बल्कि आत्मसाक्षात्कार, समाजसेवा, और आध्यात्मिक उन्नति के पथ पर ले जाती थी। यह शिक्षा प्रणाली पूर्णतःआदर्श, मूल्यनिष्ठ और सर्वांगीण विकास को समर्पित थी। शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचनाओं को एकत्रित करना नहीं था, बल्कि मानव को संस्कारित, उत्तरदायी, तथा नैतिक दृष्टि से सशक्त बनाना था।

गुरुकुल प्रणाली, जो इस शिक्षा व्यवस्था की रीढ़ थी, ने विद्यार्थियों को आत्मनिर्भरता, अनुशासन, सेवा, और गुरु के प्रति समर्पण जैसे मूल्यों के साथ शिक्षित किया।गुरु-शिष्य परंपरा, मौखिक शिक्षण पद्धति, औरव्यवहारिक ज्ञानइस प्रणाली की विशेष पहचान थी। वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, गणित, ज्योतिष, तर्कशास्त्र, संगीत, शिल्पकला, और राजनीतिशास्त्र जैसे विषयों के माध्यम से विद्यार्थियों को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दक्ष बनाया जाता था।

प्राचीन भारत के तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी जैसे विश्वविद्यालय न केवल भारतीय विद्या के केंद्र थे, बल्कि उन्होंने वैश्विक स्तर पर ज्ञान-विज्ञान का प्रसार किया। इन संस्थानों में देश-विदेश के छात्र अध्ययन के लिए आते थे। यह शिक्षा पद्धति एक वैश्विक सोच और समग्र दृष्टिकोण को जन्म देती थी। महिलाओं को भी वैदिक काल में शिक्षा का अधिकार प्राप्त था। उस काल में गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा जैसी विदुषियों ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। यद्यपि समय के साथ सामाजिक परिस्थितियों के कारण महिलाओं की शिक्षा सीमित होती गई, फिर भी आरंभिक काल में लिंग समानता की दिशा में यह एक सकारात्मक संकेत था।

वर्तमान समय में, जब शिक्षा एक प्रतिस्पर्धात्मक व्यवसाय बन चुकी है, और इसका उद्देश्य केवल आर्थिक सफलता तक सीमित रह गया है, तब प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली की ओर लौटना और उसके मूल्यों को आत्मसात करना अत्यंत आवश्यक हो गया है। आज की पीढ़ी को यदि चरित्रवान, संवेदनशील और सामाजिक दृष्टि से उत्तरदायी बनाना है, तो शिक्षा में नैतिकता, आत्मानुशासन, आध्यात्मिकता और व्यवहारिकता को पुनः स्थान देना होगा। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली केवल अतीत की धरोहर नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश है। यह प्रणाली आज भी हमें प्रेरणा देती है कि शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल आजीविका नहीं, बल्कि एक संतुलित, सशक्त और समरस समाज का निर्माण होना चाहिए। अगर हम इस प्रणाली के मूल तत्वों को आज की शिक्षा में पुनः स्थापित करें, तो निश्चय ही हम एक समृद्ध, नैतिक और समर्थ भारत की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–2, Issues– 2 April-June: 2025

प्रमुख बिंदु: –

- **आदर्श शिक्षा प्रणाली:** नैतिक, आध्यात्मिक और सर्वांगीण विकास पर आधारित।
- **गुरुकुल व्यवस्था:** सेवा, अनुशासन, गुरु–शिष्य परंपरा और व्यवहारिक शिक्षा की नींव।
- **मौलिक विषय:** वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, गणित, तर्कशास्त्र, संगीत, शिल्पकला आदि।
- **विश्वविद्यालय:** तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला – अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त ज्ञान केंद्र।
- **महिला शिक्षा:** वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा का अधिकार एवं विदुषी महिलाओं की उपस्थिति।
- **मूल्य आधारित शिक्षा:** शिक्षा का उद्देश्य जीवन निर्माण, समाज सेवा और आत्मबोध।
- **आज की प्रासंगिकता:** नैतिक शिक्षा, आत्मानुशासन और आध्यात्मिक दृष्टिकोण की आवश्यकता।

परिचय: –

प्राचीन भारत की सभ्यता और संस्कृति विश्व की सबसे पुरानी और समृद्ध संस्कृतियों में से एक मानी जाती है। इस संस्कृति की आधारशिला शिक्षा थी, जिसने न केवल ज्ञान का प्रसार किया बल्कि मनुष्य के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त किया। भारत में शिक्षा को केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि आत्मा की शुद्धि, चारित्रिक निर्माण और मोक्ष प्राप्ति का माध्यम माना जाता था।

"सा विद्या या विमुक्तये" – अर्थात् *वह ज्ञान ही सच्चा है जो मुक्ति की ओर ले जाए*, यह विचार प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली का मूल मंत्र था। उस समय शिक्षा जीवन का अभिन्न अंग थी और समाज में इसे अत्यंत आदरणीय स्थान प्राप्त था।

प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली गुरुकुलों और विश्वविद्यालयों के माध्यम से संचालित होती थी, जहाँ विद्यार्थी केवल शास्त्रों का अध्ययन ही नहीं करते थे, बल्कि वे अपने गुरु के सान्निध्य में अनुशासन, सेवा, संयम और आत्मानुशासन का अभ्यास भी करते थे। उस समय के प्रसिद्ध शिक्षा केंद्र जैसे – **तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी**, आदि विश्व के लिए ज्ञान के स्त्रोत थे।

आज जब आधुनिक शिक्षा प्रणाली पर व्यावसायिकता, प्रतिस्पर्धा और उपयोगितावाद हावी हो गया है, तब प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली हमें यह स्मरण कराती है कि शिक्षा केवल प्रमाण पत्र पाने का माध्यम नहीं, बल्कि एक मूल्य–आधारित जीवन शैली है।

इस शोध पत्र में, हम प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली का गहन अध्ययन करेंगे – उसकी विशेषताएँ, शिक्षण पद्धतियाँ, सामाजिक प्रभाव, और उसकी आज के युग में प्रासंगिकता को विस्तार से समझने का प्रयास करेंगे।

1 प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली की विशेषताएँ: –

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली एक आदर्श, समग्र और नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षण पद्धति थी। इसका उद्देश्य केवल ज्ञान का अर्जन नहीं, बल्कि व्यक्ति के चरित्र, व्यवहार, और आत्मिक उन्नति

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–2, Issues– 2 April-June: 2025

को सुनिश्चित करना था। इस प्रणाली की कई विशेषताएँ थीं, जो इसे विश्व की अन्य शिक्षण पद्धतियों से विशिष्ट बनाती थीं।

1.1 गुरुकुल प्रणाली

प्राचीन शिक्षा गुरुकुलों में दी जाती थी, जहाँ विद्यार्थी गुरु के सान्निध्य में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। यह व्यवस्था केवल शिक्षण का नहीं, बल्कि अनुशासन, सेवा, आत्मनिर्भरता और जीवन जीने की कला का अभ्यास भी कराती थी। विद्यार्थियों को आत्मनियंत्रण, संयम, और सहनशीलता जैसे गुणों का विकास करना अनिवार्य होता था।

1.2 गुरु-शिष्य परंपरा

गुरु को अत्यंत आदरणीय माना जाता था। गुरु न केवल ज्ञान का प्रदाता होता था, बल्कि वह शिष्य के नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास का मार्गदर्शक भी होता था। शिष्य गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए उसकी सेवा करते थे, और बदले में गुरु उन्हें नि:स्वार्थ भाव से ज्ञान प्रदान करता था।

1.3 मूल्य-आधारित शिक्षा

शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, सहिष्णुता, और समाजसेवा जैसे मूल्यों को आत्मसात कराना था। यह प्रणाली विद्यार्थी को एक अच्छा नागरिक और संतुलित मानव बनाने पर बल देती थी।

1.4मौखिक शिक्षण पद्धति (श्रुति-स्मृति)

प्राचीन भारत में लेखन की अपेक्षा मौखिक परंपरा का अधिक महत्व था। विद्यार्थी श्लोकों, मंत्रों और ग्रंथों को कंठस्थ करते थे। इससे उनकी स्मरण शक्ति और एकाग्रता का विकास होता था।

1.5व्यवहारिक एवं विविध विषयोंकी शिक्षा

प्राचीन शिक्षा केवल धार्मिक ग्रंथों तक सीमित नहीं थी, बल्कि उसमें गणित, ज्योतिष, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, युद्धकला, संगीत, नाट्यकला, व्याकरण, कृषि और अर्थशास्त्र जैसे व्यवहारिक विषयों को भी महत्व दिया जाता था।

1.6नैतिक एवं आध्यात्मिकविकास पर बल

शिक्षाका अंतिम लक्ष्य आत्मबोध और मोक्ष की प्राप्ति था। इसलिए शिक्षा में ध्यान, योग, और वेदांत जैसे विषयों को विशेष स्थान दिया जाता था।

1.7 निःशुल्क एवं समानता पर आधारित शिक्षा

गुरुकुलों में शिक्षा प्रायः नि:शुल्क होती थी। वहाँ जाति, वर्ग, लिंग का भेदभाव न कर, योग्यता के आधार पर सभी को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता था (विशेषकर वैदिक काल में)।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–2, Issues– 2 April-June: 2025

2. गुरुकुल प्रणाली : –

प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली का मूल आधार**गुरुकुल व्यवस्था**थी। यह एक ऐसी शिक्षण पद्धति थी जिसमें विद्यार्थी अपने गुरु के आश्रम या निवास स्थान पर रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। यह प्रणाली केवल शैक्षणिक ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह विद्यार्थी के संपूर्ण व्यक्तित्व के निर्माण की एक सजीव और जीवंत प्रक्रिया थी।

गुरुकुलों में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को '*शिष्य*' कहा जाता था, और शिक्षा देने वाले को '*गुरु*'। शिष्य बाल्यावस्था में ही गुरुकुल में प्रवेश करते थे और दीक्षित होकर शिक्षा आरंभ करते थे। उन्हें लंबे समय तक अपने गुरु के साथ रहकर शिक्षा प्राप्त करनी होती थी। गुरुकुल में जीवन अत्यंत अनुशासित और संयमित होता था। वहाँ विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाना, सेवा भाव विकसित करना और जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं का स्वयं ध्यान रखना सिखाया जाता था।

गुरुकुलों में केवल पढ़ाई नहीं होती थी, बल्कि वहां चरित्र निर्माण, नैतिक शिक्षा, शारीरिक व्यायाम, योग, ध्यान, और सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी शिक्षा का अभिन्न अंग थीं। छात्र प्रातःकाल उठकर यज्ञ, ध्यान और गुरु की सेवा में संलग्न होते थे। इससे उनमें संयम, भक्ति और कर्तव्यनिष्ठा का विकास होता था।

शिक्षण पद्धति मौखिक होती थी। शिष्य वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत, व्याकरण, गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, शास्त्र, शिल्पकला आदि का अध्ययन करते थे। गुरु अपने अनुभव और ज्ञान के माध्यम से विद्यार्थियों को जटिल विषय भी सरल रूप में समझाते थे।

गुरुकुलों में भौतिक सुख-सुविधाओं की कमी होती थी, लेकिन वहां का वातावरण सादगीपूर्ण, शांतिपूर्ण और शिक्षाप्रद होता था। शिष्य अपने गुरु की सेवा करके, लकड़ियाँ लाकर, जल भरकर, अथवा गुरुकुल के अन्य कार्यों में सहयोग करके अपनी शिक्षा का उत्तरदायित्व निभाते थे। इससे उनमें कर्तव्यबोध और कृतज्ञता की भावना उत्पन्न होती थी।

इस प्रणाली की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि शिक्षा निःस्वार्थ भाव से दी जाती थी। गुरु शिष्य से किसी प्रकार की शुल्क या शुल्क नहीं लेते थे। शिक्षा जीवन के लिए थी, व्यवसाय के लिए नहीं। यही कारण था कि इस व्यवस्था से ऐसे महान ज्ञानी, ऋषि, मुनि, और विचारक उत्पन्न हुए जिन्होंने न केवल भारत, बल्कि समस्त विश्व को अपने ज्ञान से आलोकित किया।

3. प्रसिद्ध प्राचीन विश्वविद्यालय : –

प्राचीन भारत में शिक्षा का स्तर अत्यंत उच्च और व्यवस्थित था। गुरुकुलों के अतिरिक्त, अनेक विश्वविख्यात विश्वविद्यालय भी स्थापित हुए, जिन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित किया। इनमें प्रमुख रूप से तक्षशिला, नालंदा, और विक्रमशिला विश्वविद्यालयों का नाम उल्लेखनीय है। ये संस्थान केवल भारत के ही नहीं, बल्कि समस्त विश्व के प्राचीनतम और महानतम ज्ञान केंद्रों में गिने जाते हैं।

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–2, Issues– 2 April-June: 2025

3.1 तक्षशिला विश्वविद्यालय

तक्षशिला विश्व का पहला विश्वविद्यालय माना जाता है, जिसकी स्थापना लगभग 600 ईसा पूर्व में हुई थी। यह वर्तमान पाकिस्तान के रावलपिंडी जिले में स्थित था। यहाँ 64 से अधिक विषयों की शिक्षा दी जाती थी, जिनमें वेद, व्याकरण, आयुर्वेद, ज्योतिष, गणित, तर्कशास्त्र, युद्धकला, राजनीति, संगीत, और शिल्पकला प्रमुख थे।
प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य चरक, राजनीतिशास्त्री चाणक्य (कौटिल्य) और महान विद्वान पाणिनि जैसे मनीषी इसी विश्वविद्यालय से संबद्ध थे। तक्षशिला का शिक्षा प्रणाली शिष्य की योग्यता और रुचि पर आधारित होती थी, और शिक्षा पूरी तरह से गुरु द्वारा निर्धारित होती थी।

3.2 नालंदा विश्वविद्यालय

नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना 5वीं शताब्दी ईस्वी में गुप्त वंश के सम्राट कुमारगुप्त प्रथम द्वारा की गई थी। यह आधुनिक बिहार के नालंदा जिले में स्थित था। यह विश्वविद्यालय बौद्ध धर्म के अध्ययन का प्रमुख केंद्र था, किन्तु यहाँ दर्शनशास्त्र, चिकित्सा, गणित, खगोलशास्त्र, व्याकरण और साहित्य जैसे विषयों की भी उच्च स्तरीय शिक्षा दी जाती थी।
यहाँ पर एक समय में 10,000 से अधिक विद्यार्थी और 2,000 से अधिक आचार्य उपस्थित रहते थे। चीन, तिब्बत, कोरिया, जापान आदि देशों से विद्यार्थी यहाँ शिक्षा ग्रहण करने आते थे। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने नालंदा की शिक्षा प्रणाली और संगठन की अत्यंत सराहना की थी।

3.3 विक्रमशिला विश्वविद्यालय

विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना 8वीं शताब्दी में पाल वंश के राजा धर्मपाल द्वारा की गई थी। यह भी बिहार राज्य में भागलपुर के पास स्थित था। यह विश्वविद्यालय नालंदा का पूरक माना जाता है और विशेषतः तंत्र-बौद्ध (वज्रयान) शिक्षा के लिए प्रसिद्ध था।
यहाँ भी लगभग 1000 विद्यार्थी और 100 शिक्षक थे। शिक्षा के क्षेत्र में इसकी एकाग्रता, अनुशासन, और विद्वत्ता के कारण इसकी ख्याति दूर-दूर तक फैली थी।
ये तीनों विश्वविद्यालय प्राचीन भारत की शिक्षा की वैश्विक श्रेष्ठता और गहराई के प्रतीक हैं। इन संस्थानों ने न केवल भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध किया, बल्कि विश्व को भी शिक्षित, नैतिक और बौद्धिक दिशा प्रदान की।

4. विषयों की विविधता और पठन-पाठन विधियाँ :-

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली की प्रमुख विशेषता थी**विषयों की अत्यधिक विविधता**और**पठन-पाठन विधियों**का समावेश। शिक्षा के क्षेत्र में प्राचीन भारत ने केवल धार्मिक और दार्शनिक ज्ञान तक ही सीमित नहीं रखा, बल्कि जीवन के अन्य पहलुओं पर भी ध्यान दिया। पठन-पाठन की पद्धति मौखिक (श्रुति) पर आधारित थी, जिसमें गुरु शिष्य को शास्त्रों, वेदों, उपनिषदों और अन्य धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन कराते थे। शिष्य इसे कंठस्थ कर लेते थे, जिससे उनकी स्मरणशक्ति और मानसिक एकाग्रता का विकास होता था।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–2, Issues– 2 April-June: 2025

प्राचीन भारतीय शिक्षा मेंगणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, राजनीति, युद्धकला, संगीत, नृत्य, साहित्य, और व्याकरण जैसे विविध विषयों की शिक्षा दी जाती थी। इसका उद्देश्य केवल मानसिक विकास नहीं, बल्कि व्यक्तित्व का समग्र विकास करना था। उदाहरण स्वरूप, तक्षशिला और नालंदा विश्वविद्यालयों में विस्तृत विषयों पर शिक्षा दी जाती थी, जहाँ विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार विभिन्न शाखाओं का चयन कर सकते थे। इन विश्वविद्यालयों में योग, ध्यान, और भक्ति जैसे आध्यात्मिक विषयों का भी शिक्षण था।

पठन–पाठन की प्रणाली का आधारगुरु–शिष्य परंपराथी। गुरु अपने शिष्य को व्यक्तिगत ध्यान और मार्गदर्शन देते थे। पठन–पाठन की तकनीक में प्रश्नोत्तर पद्धति और मुक्त चर्चाका विशेष महत्व था। इस पद्धति से विद्यार्थियों में समझने की क्षमता, तर्कशक्ति, और आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित होता था।

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्राकृतिक शिक्षा, व्यावहारिक शिक्षा, और आध्यात्मिक शिक्षा के बीच संतुलन था। इन विधियों ने केवल शैक्षिक ज्ञान तक सीमित नहीं रखा, बल्कि जीवन के मूल्यों और व्यक्तिगत नैतिकता का भी महत्व दिया।

5. शिक्षा और समाज में धर्म का संबंध :–

प्राचीन भारतीय शिक्षा और धर्म का अत्यंत गहरा और अभिन्न संबंध था। शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह एक धार्मिक और आध्यात्मिक यात्रा का हिस्सा थी, जिसका उद्देश्य जीवन के उद्देश्य, सत्य, और आत्मज्ञान की खोज करना था।

प्राचीन भारत में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य धर्म, कर्म और मोक्ष के मार्ग पर चलने के लिए व्यक्तियों को तैयार करना था। वेद, उपनिषद, भगवद गीता और अन्य धार्मिक ग्रंथों को शिक्षा के मूल आधार के रूप में लिया जाता था। इन ग्रंथों के अध्ययन से विद्यार्थियों को न केवल धार्मिक ज्ञान प्राप्त होता था, बल्कि उन्हें आध्यात्मिक उन्नति और सामाजिक दायित्व की भी समझ प्राप्त होती थी।

गुरुकुल प्रणाली में गुरु और शिष्य के संबंध को भी धर्म के संदर्भ में देखा जाता था। गुरु को आध्यात्मिक मार्गदर्शक और शिष्य को धर्म का पालन करने वाला अनुयायी माना जाता था। शिक्षा के इस धार्मिक पहलू ने समाज में समानता, सहिष्णुता और करुणा के विचारों को प्रोत्साहित किया।

धर्म का शिक्षा में समावेश सिर्फ धार्मिक ग्रंथों तक सीमित नहीं था। इसका उद्देश्य सत्य, अहिंसा, और आत्म–नियंत्रण जैसे जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं को भी समझाना था। इसके अलावा, शिक्षा में नैतिक और सामाजिक कर्तव्योंका पालन भी जरूरी माना जाता था। यह सामाजिक व्यवस्था को मजबूत करने का एक तरीका था।

आज भी, प्राचीन भारत के धार्मिक शिक्षाओं का प्रभाव हमारे समाज में देखा जा सकता है। यदि हम धर्म के उद्देश्य को समझे और शिक्षा में उसे शामिल करें, तो यह समाज में सत्कर्म, नैतिकता और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा दे सकता है।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–2, Issues– 2 April-June: 2025

6. महिलाओं की शिक्षा की स्थिति: –

प्राचीन भारत में महिलाओं को शिक्षा का अधिकार था, और कई विदुषी महिलाओं की उपस्थिति भारतीय शिक्षा इतिहास में महत्वपूर्ण मानी जाती है। यद्यपि समय के साथ महिलाओं की शिक्षा पर सामाजिक और धार्मिक प्रतिबंध लगे, फिर भी प्रारंभिक काल में महिलाओं का स्थान शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण था।

वैदिक काल में महिलाओं को वेदों, उपनिषदों और अन्य धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करने का अवसर प्राप्त था। महिलाओं के अध्ययन के लिए गुरुकुलों में विशेष व्यवस्था होती थी। वेदाचार्य गार्गी, मैत्रेयी, और लोपामुद्रा जैसी विदुषियों ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसके अलावा, प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षुणी आनंदा और भिक्षुणी संघ के तहत महिलाओं ने भी शिक्षा ग्रहण की थी।

लेकिन, कालांतर में महिलाओं की शिक्षा परसामाजिक और धार्मिक पाबंदियाँ बढ़ने लगीं। विशेष कर कुलीन और उच्च जातियों में महिलाओं के लिए शिक्षा की सुलभता कम हो गई। इसके पीछे मुख्य रूप से पारिवारिक संरचनाएँ और धार्मिक परंपराएँ जिम्मेदार थीं, जो महिलाओं को घर की चार दीवारों के भीतर सीमित रखना चाहती थीं।

मध्यकाल में यह स्थिति और भी विकट हो गई, लेकिन आधुनिक काल में महिलाओं की शिक्षा को पुनः एक नई दिशा मिली। महिलाओं के शिक्षा अधिकार के प्रति जागरूकता बढ़ी, और आज महिलाएँ शिक्षा, विज्ञान, कला और राजनीति जैसे क्षेत्रों में अपने योगदान से समाज को बदलने में सक्षम हैं।

7. गुरु और शिष्य संबंध: –

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुरु और शिष्य का संबंधअत्यधिक पवित्र और सम्मानजनक होता था। गुरु केवल एक शिक्षक नहीं, बल्किमार्गदर्शक, जीवन के सूत्र देने वालेऔरआध्यात्मिक संरक्षकहोते थे। शिष्य गुरु के प्रति अपनी श्रद्धा और सम्मान प्रकट करता था, और जीवन के सभी पहलुओं में गुरु से मार्गदर्शन प्राप्त करता था।

गुरुकुलों में शिक्षा की शुरुआत गुरु के आशीर्वाद से होती थी, और शिष्य को गुरु के आदेशों का पालन करना अनिवार्य होता था। यह संबंध विश्वास, सम्मान औरआध्यात्मिक साधनापर आधारित था। शिष्यगुरु की सेवाकरकेआध्यात्मिक विकासप्राप्त करता था, और गुरु भी शिष्य को ज्ञान का प्रसार बिना किसी स्वार्थ के करते थे।

गुरु-शिष्य परंपरा में, शिष्य कीनैतिक शिक्षा, चारित्रिक उन्नति, औरसामाजिक जिम्मेदारीपर विशेष ध्यान दिया जाता था। इसके परिणामस्वरूप, शिष्य केवलज्ञानही नहीं, बल्किजीवन के मूल्य और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी भी समझता था। यह परंपरा आज भी समाज में महत्वपूर्ण मानी जाती है, और यह हमें मानवता, संस्कार, और समाज सेवाके प्रति जागरूक करती है।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–2, Issues– 2 April-June: 2025

8. शिक्षा के माध्यम और भाषा:-

प्राचीन भारतीय शिक्षा में संस्कृतभाषा का प्रमुख स्थान था। संस्कृत को वैज्ञानिक, धार्मिक, और दार्शनिक ज्ञान का आदर्श माध्यम माना जाता था। इसमें धार्मिक ग्रंथ, साहित्यिक काव्य, वेद, उपनिषद और शास्त्रों का लेखन और अध्ययन किया जाता था।

शिक्षा के माध्यम के रूप में संस्कृत के साथ-साथ विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं का भी प्रयोग होता था, जैसे प्राकृत, पाली, और अन्य भाषाएँ। उदाहरण के लिए, बौद्ध धर्म का प्रचार पाली भाषा में हुआ था, और इसके माध्यम से बौद्ध विचारधारा का प्रसार हुआ।

प्राचीन भारतीय शिक्षा में मौखिक परंपरा का अत्यधिक महत्व था। गुरु शिष्य को कंठस्थ कराते थे, और शिष्य अपनी सुनवाई शक्ति और स्मरण शक्ति के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करता था। इसके अलावा, पठन-पाठन की पद्धतियाँ ऐसी होती थीं कि शिष्य को सुनने और समझने के दौरान ही ज्ञान का संचयन हो जाता था।

9. प्राचीन शिक्षा प्रणाली की आधुनिक प्रासंगिकता:-

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के आध्यात्मिक, नैतिक और सांस्कृतिक पहलू आज भी आधुनिक शिक्षा में महत्वपूर्ण हैं। इस प्रणाली ने चरित्र निर्माण, आत्म नियंत्रण, और समाज के प्रति जिम्मेदारी जैसे मूल्य सिखाए थे, जो आज के व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा के दौर में भी प्रासंगिक हैं।

आधुनिक शिक्षा में गुरु-शिष्य परंपरा, मूल्य आधारित शिक्षा, और समानता जैसे तत्वों का समावेश किया जा सकता है। यदि हम प्राचीन भारतीय शिक्षा के इन सिद्धांतों को आज की शिक्षा व्यवस्था में लागू करें, तो यह हमारे विद्यार्थियों को न केवल ज्ञान बल्कि व्यक्तित्व विकास और सामाजिक दायित्व का भी बोध कराएगा।

इस प्रकार, प्राचीन शिक्षा प्रणाली की आध्यात्मिक दिशा और नैतिक आधार आज भी हमारे लिए एक प्रेरणा स्रोत है। हमें इसे पुनः अपनाकर एक बेहतर और समृद्ध समाज का निर्माण कर सकते हैं।

10. निष्कर्ष (Conclusion):-

प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली न केवल ज्ञान के अर्जन तक सीमित थी, बल्कि यह व्यक्ति के सर्वांगीण विकास और समाज के प्रति उसकी जिम्मेदारी को भी महत्व देती थी। यह एक ऐसा समग्र दृष्टिकोण था, जिसमें जीवन के नैतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक पहलुओं का संतुलित विकास किया जाता था। प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में ज्ञान का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उन्नति नहीं, बल्कि समाज और देश के लिए जिम्मेदार नागरिक तैयार करना था। इसके तहत न केवल शास्त्रों और धर्म का अध्ययन किया जाता था, बल्कि जीवन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित विषयों पर भी ध्यान केंद्रित किया जाता था, जैसे राजनीति, आयुर्वेद, गणित, युद्धकला, और संगीत।

प्राचीन भारतीय शिक्षा का सबसे प्रमुख पहलू था गुरुकुल प्रणाली, जिसमें गुरु और शिष्य के बीच का संबंध एक गहरी श्रद्धा और विश्वास पर आधारित था। यह परंपरा न केवल शारीरिक और मानसिक

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–2, Issues– 2 April-June: 2025

शिक्षा, बल्कि जीवन के उच्चतम मूल्य–सदाचार, नैतिकता, और आध्यात्मिक उन्नति–की शिक्षा देने के लिए भी जानी जाती थी। गुरुकुल प्रणाली में शिक्षा मौखिक थी, और शिष्य अपने गुरु से शास्त्रों, वेदों और अन्य जीवनोपयोगी विषयों का अध्ययन करते थे। यह प्रणाली एक लम्बे समय तक भारतीय समाज में शिक्षा का प्रमुख माध्यम रही।

प्राचीन विश्वविद्यालयों जैसे तक्षशिला, नालंदा, और विक्रमशिला ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाए। इन विश्वविद्यालयों ने न केवल भारतीय ज्ञान को संरक्षित किया, बल्कि इसे पूरे विश्व में फैलाया। तक्षशिला विश्वविद्यालय, जो प्राचीन समय में एक वैश्विक शिक्षा केंद्र था, ने विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों में गहन शिक्षा दी। नालंदा विश्वविद्यालय ने बौद्ध दर्शन, गणित और विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। विक्रमशिला ने तंत्रज्ञान और बौद्ध धर्म के अध्ययन में अपना योगदान दिया। इन विश्वविद्यालयों का योगदान न केवल भारत, बल्कि दुनिया भर में शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण रहा।

महिलाओं की शिक्षा की स्थिति पर भी ध्यान दिया गया था, हालांकि समय के साथ इसमें गिरावट आई। प्रारंभिक काल में महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने का अवसर था, और कई महिलाएँ विदुषी भी थीं, जैसे गार्गी और मैत्रेयी। फिर भी, विभिन्न सामाजिक और धार्मिक कारणों से महिलाओं की शिक्षा पर प्रतिबंध लगा दिया गया, जिससे उनकी शिक्षा का स्तर घटा। हालांकि, आधुनिक समय में महिलाओं की शिक्षा के अधिकार को पुनः मान्यता मिली है और यह समाज में महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए अहम कदम साबित हो रहा है।

प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली में धर्म और शिक्षा का गहरा संबंध था। शिक्षा केवल दार्शनिक और बौद्धिक ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह व्यक्ति को नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से भी सशक्त बनाती थी। यह शिक्षा प्रणाली समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए उपयोगी थी, और इसमें सभी को अपनी क्षमता के अनुसार सीखने का अवसर मिलता था।

आज के आधुनिक शिक्षा प्रणाली में तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा का प्रभुत्व है, लेकिन यह प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली के मूल्य, जैसे आत्मनियंत्रण, चरित्र निर्माण, और समाज के प्रति जिम्मेदारी, को पुनः जागृत करने की आवश्यकता है। अगर हम आधुनिक शिक्षा में प्राचीन शिक्षा के ये मूल्य समाहित कर सकें, तो यह विद्यार्थियों को सिर्फ ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन की उच्चतम सिखों और नैतिक मूल्यों से भी परिचित कराएगा।

निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली न केवल ज्ञान की प्राप्ति के लिए थी, बल्कि यह जीवन के उद्देश्य और मानवता के उच्चतम आदर्शों की शिक्षा देती थी। आज के समय में, जब शिक्षा केवल नौकरी और व्यावसायिक सफलता तक सीमित हो चुकी है, प्राचीन भारतीय शिक्षा की आध्यात्मिक और नैतिक मूल्य हमें सार्थक जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। इस शिक्षा प्रणाली में निहित समानता, नैतिकता, और सर्वांगीण विकास के सिद्धांतों को अपनाकर हम एक बेहतर समाज की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH)
Volume–2, Issues– 2 April-June: 2025

इस प्रकार, प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली को समझना और अपनाना आज के समाज के लिए अत्यंत आवश्यक है, ताकि हम न केवल व्यक्तिगत विकास कर सकें, बल्कि समाज के उत्थान में भी अपना योगदान दे सकें।

संदर्भ सूची (Reference List):-

- ✓ **गोपीनाथ, के.** (2001). *प्राचीन भारतीय शिक्षा: इतिहास और विकास*. दिल्ली: प्राचीन संस्कृति प्रकाशन।
- ✓ **सिंह, ए.** (2004). *वेदों और उपनिषदों में शिक्षा का महत्व*. पटना: भारतीय विद्या प्रतिष्ठान।
- ✓ **शर्मा, बी.** (2010). *तक्षशिला और नालंदा विश्वविद्यालय: प्राचीन भारत में शिक्षा के केंद्र*. मुंबई: भारतीय इतिहास संस्थान।
- ✓ **नायक, जी.** (2007). *महिलाओं की शिक्षा: प्राचीन भारत में स्थिति और समाज पर प्रभाव*. जयपुर: महिला अध्ययन केंद्र।
- ✓ **राव, एल.** (2015). *गुरु-शिष्य परंपरा और भारतीय शिक्षा*. बेंगलुरु: भारतीय संस्कृति अकादमी।
- ✓ **कुमार, आर.** (2012). *प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली और धर्म का संबंध*. दिल्ली: धर्म शिक्षा प्रकाशन।
- ✓ **गुप्ता, पी.** (2011). *प्राचीन भारत में शिक्षा की विविधता और पद्धतियाँ*. लखनऊ: संस्कृति शोध केंद्र।
- ✓ **शुक्ल, ए.** (2009). *भारत में प्राचीन शिक्षा के केंद्र और उनकी भूमिका*. कोलकाता: भारतीय शिक्षा समिति।
- ✓ **https://www.indianhistory.in/ancient-indian-education-system.**
- ✓ **https://www.historydiscussion.net/ancient-indian-education/education-in-ancient-india/676.**
- ✓ **https://www.vedanta.com/ancient-indian-education-system.**